प्रातःक्लास 29/4/68 ओमशान्ति ''शिवबाबा याद है?''

ओमशान्ति। पतित–पावन ज्ञान सागर शिव भगवानुवाचः बच्चे जानते हैं सतयुग है पावन राम–राज्य। कलियुग है पतित रावण राज्य। तो गोया सभी आसुरी रावण सम्प्रदाय हो गये। कहते भी हैं ना आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय। आसुरी सम्प्रदाय भ्रष्टाचारी सम्प्रदाय है ना; परन्तु किसको कहो तुम भ्रष्टाचारी हो तो बिगड़ पड़ेंगे। किसको कहो तुम स्वर्ग़ के चलने लायक नहीं हो तो, लायक के बदली नालायक कहो तो बिगड़ पड़ेंगे। यह अक्षर यहां ही काम आते हैं। बच्चे यहां आते हैं तो समझते हैं हम ब्रह्माकुमार–कुमारियों पास जाते हैं नर से नारायण बनने, नारी से लक्ष्मी बनने लिए। भक्तिमार्ग में कथाएं तो बहुत सुनी हैं। सत्य ना. की कथा अभी प्रैक्टिकल में सुनते हो। फिर भक्तिमार्ग में पास्ट की कथा सुनेंगे। अभी जो कुछ होता है वह प्रैक्टिकल सभी कुछ हो रहा है। फिर इनका भक्तिमार्ग में गायन होगा। तुम फिर भी पुजारी बन जावेंगे। अभी तुम पूज्य बन रहे हो। बाप कहते हैं तुम्हीं पूज्य, तुम्हीं पुजारी बनते हो। पूज्य कैसे बनते, फिर पुजारी कैसे बनते हैं, पूज्य कौन बनाते, पुजारी कौन बनाते हैं यह तुम जानते हो। इसको पढ़ाई कहा जाता है। भक्तिमार्ग में मनुष्य कुछ भी समझते नहीं; इसलिए कहा ही जाता है पत्थर बुद्धि। आसुरी बुद्धि। कौड़ी जैसे भी नहीं, फिर कहा जाता है हीरे जैसा जन्म अमोलक वह भी है। तुम हीरे जैसा बन रहे हो। फिर 84 जन्मों बाद कौड़ी जैसा बनते हो। यह ल.ना. भी इस सयम कौड़ी जैसे हैं। तो उन्हों की पूजा क्यों करें? यह जो हीरे मिसल थे, वह आत्मा कहां गई जिनको यह (ल.ना.का) शरीर मिला था? वह पुनर्जन्म लेते–2 आकर गांवरे का छोरा बने हैं। कहां वह विश्व के मालिक, कहां फिर गांवरे के छोरा। कितना फ़र्क है। यह नॉलेज भी तुम बच्चों को ही मिलती है। भक्तिमार्ग में कितने गपोड़े हैं। कल्प की आयु कितनी लम्बी–चौड़ी कर दी है। यह है चैतन्य वृक्ष। इनकी आयु लाखों वर्ष थोड़े ही हो सकती है। तुम बच्चों को अभी ज्ञान मिलता है। तो तुम समझते हो हम सचमुच पहले बन्दर सेना थे जिन द्वारा बाप इस रावण राज्य को खलास करा कर नई दुनियां बनाते हैं। बच्चे जानते हैं आदि सनातन देवी–देवता धर्म का हम अपना राज्य योगबल से स्थापन कर रहे हैं। बाहुबल से कोई विश्व पर राज्य कर न सके। अभी एक क्रिश्चियन का धर्म कितना बड़ा है। पौना हिस्सा दुनियां पर जैसे राज्य करते थे। ऐसे भी कह सकते भिन्न–2 भाई लोग बाहुबल से अथवा लड़ाई के बल से राज्य करते थे। अफ्रीका, चीन, जापान हिन्दुस्तान में जैसे इन्हों का ही राज्य था; परन्तु बाहुबल वाले विश्व पर राज्य कर न सकें। अभी तुम बच्चों को सारे विश्व का राज्य मिलना है। तुम जब थे तो और कोई धर्म न था। 5000 वर्ष की बात है। बाप कहते हैं तुमको मैं राज्य देकर गया, तुम सभी खर्च कर भिखारी बन गये हो। लज्जा थोड़े ही आती हैं। पीले पड़ जाते हैं। यह समझते भी हैं भारत विश्व का मालिक था। अभी कंगाल हो, भीख मांगते रहते हैं। लज्जा नहीं आती। भारत जो 100% सॉलवेन्ट था वह ही अभी 100% इनसॉलवेन्ट बन पड़ा है। अनाज़ भी इन्हों को सारा बाहर से मिलता रहता है। नहीं तो पहले भारत से ही सारा अनाज़ विलायत में जाता था। बहुत अनाज होता था। अभी वह रिर्टन में सर्विस कर रहे हैं। कितना अनाज बाहर से आता है। ढेर अनाज मंगाते रहते हैं। यह तो गसा मारते रहते हैं कि यहां बहुत अनाज़ हो जावेगा। तुम जानते हो अकाल तो पड़(ना) है। कुदरत(ी) आपदाएं ज़रूर आनी हैं। तुम बच्चों को रहने लिए नई पवित्र दुनियां ज़रूर चाहिए। अभी तुम इसके लिए पुरु. कर रहे हो। यह सभी रचयिता और रचना का नॉलेज बाप ही बतलाते हैं। आगे तुम नही जानते थे। कोई भी शरीरधारी नहीं जानते थे। अभी बाप आये हैं। तुम आत्म–अभिमानी बनते हो तो जानते जाते हो। जितना आत्म–अभिमानी नॉलेजफुल बनेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। इसमें ही माया की युद्ध चलती है। बाकी कौरवों–पाण्डवों की लड़ाई नहीं है। वह है कौरव सम्प्रदाय, यह है पाण्डव सम्प्रदाय। तुम्हारा सेनापति(त) कौन है? जो विश्व का मालिक है। वास्तव में विश्व का मालिक बनते नहीं हैं। तुमको विश्व का मालिक बन(ाते) हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि का सारा चक्र फिरता रहता है। तुम्हारा नाम ही रखा है स्वदर्शन चक्रधारी। (प्रजा)

पिता ब्रह्मामुखवंशावली सर्वोत्तम ब्राह्मण कुलभूषण देवताओं से भी तुम्हारा कुल बहुत ऊँचा है। चोटी ऊँची है ना। विराट रूप बनाया है उसमें चोटी को भी उड़ा दिया है। तो बाप को भी उड़ा दिया है। बाकी देवताएं, क्षत्रिय, वैश्य,शूद्र चार वर्ण दिखाते हैं ना; क्योंकि यह डिनायस्टी होती है। ब्राह्मण कुल तो है बहुत छोटा। इनका किसको भी पता नहीं है। माला भी फेरते हैं तो उसमें भी युगल मेरू है। उनका समझाया जाता है यह ब्रह्मा–सरस्वती वा ल.ना.। कोई भी विद्वान–आचार्य त्रिमूर्ति का अर्थ बता न सके। ब्रह्मा कितना साधारण बैठा है और फिर विष्णु कितना सिंगारा हुआ है। इन्हों का सम्बन्ध कब कोई बता न सके। तुम झट बताते हो। यह ब्रह्मा ही एक सेकण्ड में विष्णु बनते हैं। विष्णु को ब्रह्मा बनने में 84 जन्म, 5000 वर्ष लगते हैं। यह है ही 84 का चक्र। बाकी शंकर के लिए बाप ने समझाया है ऐसी कोई चीज़ तो होती नहीं। गले में सर्पों की माला देखकर पार्वती ही डर जाये। और फिर उन पर कितना दोष रखा है कि धतूरा खाते हैं। भांग पीते थे। वह थोड़े ही किसका विनाश करते हैं। विनाश करना तो पाप है ना। यह सभी झूठ बतलाते हैं। आसुरी सम्प्रदाय है ना। जिस सांइस से सुख है उसी सांइस से घमण्ड से दुःख भी होता है। एरोप्लेन कितने सुख के लिए बनाये हैं। वह भी नीचे गिर पड़ते हैं तो खलास। फुल प्रूफ नहीं है। सतयुग में तो फुल प्रूफ होते हैं। कब गिरते नहीं। खराब हो न सके। पुराना होगा तो डिसट्राब(डिस्टर्ब) कर देंगे। दुःख का नाम भी नहीं। यहां सुख के साथ दुःख भी है। बाप तुमको कोई भी तकलीफ नहीं देते। बाप को पुकारते हैं बाबा आप रहमदिल हो, आकर हमको पावन बनाओ। पानी को तो ऐसे नहीं बुलाते। पानी तो पीते रहते हो। उसमें भी कचड़ा आदि पड़ता है। यह नदियां भी सतयुग से चली आ रही हैं। अभी तुम समझते हो बाबा आकर हमारी आत्मा को कंचन करते हैं। आत्मा कंचन तो शरीर भी कंचन मिलता है। फिर खाद पड़ती है तो सतोप्रधान से सतो बन जाते हैं। आत्मा में जंक चढ़ी चांदी की। फिर तांबे की। फिर लोहे की। बाप तो है ही प्योर चकमक। उसमें कब जंक लग न सके। सूई का मिसाल दिया जाता है ना। आत्मा तो इतनी छोटी बिन्दी है। आत्मा को भी जानना चाहिए ना। उसमें 84 का पार्ट अविनाशी है। आत्मा भी अविनाशी, पार्ट भी अविनाशी। वण्डर है ना। सबसे जास्ती कुदरत है यह। चीज़ है तब तो कुदरत कहते हैं। सबसे कुदरती है आत्मा। बहुत छोटी है। भृकुटि के बीच सितारा चमकता है। टीका भी यहां ही देते हैं। आत्मा को इन आँखों से देख नहीं सकते। इतनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट। वण्डर है ना। सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। तुम समझावेंगे तो कह देंगे यह तुम्हारी कल्पना है। अच्छा, भला परमात्मा का रूप बताओ। जो कुछ सुना है तो कह देते हैं इतना तेजोमय है। अर्जुन का मिसाल बताया है ना। बाबा थोड़े ही कहते, ऐसा रूप दिखाया जो मैं सहन न कर सकता। हमने तो परमात्मा को देखा भी नहीं। आत्मा को देखा है। आत्मा का जब दीदार होता है तो पवित्र आत्मा का ही होगा। आत्मा पवित्र, परमात्मा भी पवित्र है। फ़र्क तो है नहीं। तो आत्मा भी पवित्र बनकर घर में रहती है। बाप और बच्चों में कोई फ़र्क नहीं। सिर्फ़ वह जन्म–मरण रहित है। उनमें ज्ञान है। कहते हैं अच्छा, मेरा दीदार भी हो, फिर उनसे फायदा क्या? आत्मा भी बहुत छोटी, बाप भी बहुत छोटा है। शिष्य गुरू के बाजू में बैठेंगे या गुरू आकर शिष्य के बाजू में बैठेंगे? यह भी ऐसे है ना। अभी बाप कहते हैं आत्माअभिमानी बनो। पहले समझाते थे भाई–बहन समझो; परन्तु इससे भी देखा क्रिमिनल आई होती है। तो फिर अभी कहते हैं भाई–2 समझो। आत्मा समझो तो नाम–रूप से निकल जावेंगे। यह है बड़ी मन्ज़िल। विश्व का मालिक बनना कम है क्या! तुम भी समझते हो अभी 84 का चक्र लगाकर पूरा किया है। मनुष्यों ने तो 84 लाख योनियां बतला दी हैं। सभी हैं घोर अंधियारे में। बाप समझाते हैं यह तो कल्प ही 5000 वर्ष का है। अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। तु(म)को कहते हैं, क्या इतने सभी शास्त्र झूठे हैं? तुम सीधा किसको कहो कि हाँ (झेठी)झूठे हैं तो पत्थर मारने लग पड़ें। बोलो झूठे नहीं हैं वह तो हम आधा कल्प से पढ़ते

(ही) आये हैं। पढ़ते–2 तमोप्रधान बन गये हैं; इसलिए बाप आकर सत्य बताते हैं। उनको कहा जाता है ट्रुथ। सभी सच ही बतलाते हैं। सच्च खण्ड की स्थापना करते हैं। भारत सच्च खण्ड था। अभी झूठ खण्ड है। तुम मीठे–2 बच्चे जानते हो राज्य लेना और गंवाना यह तुम्हारा खेल है। ज्ञान चिक्षा पर बैठने से राज्य लेना, काम चिक्षा पर बैठने से राज्य गंवाना। यह ड्रामा का खेल भारत में ही है। बाकी तो है बायप्लाट्स। अपना धर्म बहुत सुख देने वाला है। फिर तो अपना धर्म की बात छोड़ दूसरे धर्म की बात ही क्यों करें? देवता धर्म की निशानियां तो हैं ना। (बनियन ट्री का मिसाल) यह तो और सभी धर्म भी हमारे आदि सनातन देवी–देवता धर्म के ब्रैंन्चेज़ हैं। बड़ का झाड़ का भी यह वण्डर है। बड़ का झाड़ भी बहुत बड़ा होता है। हमारा आदि सनातन देवी–देवता धर्म जो फांउन्डेशन है वह अभी है नहीं। बाकी तो सभी धर्म खड़े हैं। बाप कहते हैं मैं आता हूँ आदि सनातन देवी–देवता धर्म की स्थापना करने। फिर और सभी खलास हो जावेंगे। वहां भक्ति का नाम नहीं। बाप कहते हैं सबसे जास्ती भक्ति भी मैंने और तुम बच्चों ने की है। जो बच्चे अच्छी रीत धारण कर और कराते है वही पहले भक्ति में भी थे। अव्यभिचारी शिवबाबा की भक्ति उन्होंने की थी जो इस समय बहुत होशियार हैं। बाकी तो नम्बरवार हैं। सभी तो सतयुग में नही आवेंगे। जो पीछे आने वाले हैं अभी तब भी आते रहते हैं। वह स्वर्ग़ में जा नहीं सकते हैं। यह भी बड़ा हिसाब–किताब है। यह भी अभी तुम सुनते हो। फिर घर में गये, धंधे आदि में सभी भूल जाते हो। झोली खाली हो जाती है। टीचर तो सभी को (एक) जैसा पढ़ाते हैं। कोई योग युक्त न है तो झोली में ठहरता नहीं। बह जाता है। बाप तो सभी की झोली भरते हैं। टीचर पढ़ाते तो एकरस हैं। फिर कोई फेल होते। कोई स्कॉलरशिप ले लेते हैं। कोशिश कर स्कॉलरशिप लेनी चाहिए। तुम कहते भी हो हम आये ही हैं नर से नारायण, नारी से ल. बनने। बाप सत्य नारायण की कथा सच्ची–2 सुनाते हैं। सारी राजधानी बननी है कल्प पहले मिसल। इसमें ज़रा भी फ़र्क नहीं पड़ सकता। कहते हैं यह पहाड़ तोड़–2 कर इतने मकान बने फिर पहाड़ कैसे बनेंगे? अरे, यह ड्रामा का चक्र रिपीट होता है। फिर भी हूबहू रिपीट होगा। सोमनाथ का मन्दिर भी बनेगा। खानियां फिर भरपूर हो जावेंगे। अभी तो कलराठी धरती है। तो अनाज आदि में भी इतना स्वाद नहीं है। यह ज्ञान बाप ही देते हैं। बाकी तो सभी है भक्ति। भक्ति जन्म–जन्मांतर की जाती है। ज्ञान एक अंतिम जन्म में बाप ही देते हैं। ज्ञान से सद्गति होती है। पर मिल जाती है। अभी पर टूटे हुये हैं। तो आत्मा उड़ नहीं सकती। घोर अंधियारा है ना। ज्योत बुझी हुई है। बाप सामने बैठते हैं तो बैटरी भरती है; परन्तु सभी थोड़े ही बाप से योग लगाकर बैठते हैं। कहां न कहां बुद्धि भाग जाती है। भक्ति में भी ऐसे होता है। कोई विरला, कोई नवधा भक्ति करते हैं। तब ही सा. होता है। बस समझते हैं यह भगवान से मिल गया। बाप कहते हैं भगवान से मिलता कोई भी नहीं है। सिर्फ़ मेहनत का फल सा. हुआ। भावना का भाड़ा मिला , बस। वह कोई पढ़ाई नहीं है। यहां तो पढ़ाई है। बाप आकर मीठे–2 रूहों को पढ़ाते हैं। कहते हैं मैं पतित–पावन हूँ। मुझे याद करो। बाप भी बच्चों को याद करते हैं। याद उनको करेंगे जो अच्छी रीत यात्रा में और सर्विस में लगे रहते हैं। ऐसे–2 बच्चों को बाप उनकी आत्मा को भी और शरीर को भी याद करते हैं। शरीर बिगर तो आत्मा याद आ न सके। पहले शरीर, पीछे आत्मा। फलाने की आत्मा याद करती है तो फलाना याद आवेगा ना। मनोहर है, कुमारिका है, मोहनी है बहुत अच्छा याद करती है। बहुतों की सर्विस करती है। सर्विस बिगर रह नहीं सकती। जैसे बाबा भी सर्विस पर आये हैं। सर्विस बिगर रहते थोड़े ही हैं। कुछ भी हो बाबा मुरली ज़रूर सुनावेंगे। हॉस्पिटल में होता हूँ तो दो–चार दिन नहीं चलाते हैं। फिर लिखता हूँ। वह भी जैसे मुरली चली ना। मुरली नॉलेज को कहा जाता है। यह है ही पढ़ाई। बाप कहते हैं मैं सुप्रीम टीचर हूँ। सुप्रीम बाप भी हूँ। लौकिक बाप बड़ा या पारलौकिक बाप बड़ा? लौकिक बाप भी पारलौकिक को याद करते हैं। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग।